रसोई में चिड़ियाघर

-कृष्ण कुमार

उन दिनों में पहले दर्जे में था। स्कूल से लौट कर अक्सर अपने चाचा के घर जाया करता था। उनका घर हमारे मुहल्ले ही में था। वह अकेले रहते थे। घर का सारा काम खुद करते थे। उनकी मेज़ किताबों और कागजों से इतनी लदी रहती थी कि देख कर लगता था, मानो अभी ढह जाएगी। लेकिन ऐसा हुआ कभी नहीं क्योंकि मेज के पाये किसी हाथी के बच्चे की टांगों जितने मोटे और मजबूत थे।

जो हालत मेज की थी, लगभग वैसी ही चाचा के दोनों कमरों और रसोई की थी। रसोई में भी एक मेज रखी थी जिस पर कभा-कभी कोई किताब-कॉपी देख कर मैं चाचा को उसकी याद दिलाता था। रसोई की इस मेज के पास एक ऊंची अलमारी रखी थी जो अक्सर बंद रहती थी। लेकिन मुझे मालूम था कि चाचा ने इसमें तरह-तरह का सामान रखा है- बिस्कुट और डबल रोटी से लेकर बर्तनों और बड़े-बड़े डिब्बों तक।

चाचा की एक आदत मुझे अब तक याद है। उन्हें बात करते-करते छोटी-मोटी चीज़ों के बारे में कहानियां बनाने का शौक था। सच बात तो यह है कि उनके घर की शायद ही कोई चीज़ होगी जिसके बारे में कोई न कोई कहानी उन्होंने मुझे सुनाई न हो। मेज पर रखे टेबल लैंप को वे शुभा नाम की लड़की बताते थे जिसे उन्होंने पांच साल के लिए लैंप बना दिया था। शुभा मन लगाकर नहीं पढ़ती थी। अब लैंप बन कर उसे हर समय किताबों पर झुके रहना पड़ता था। शायद चाचा कर ख्याल यह था कि पांच साल बाद जब वह लैंप को फिर स लड़की बनाएंगे, तब तक शुभा बहुत सारी किताबें पढ़ कर होशियार बन चुकी होगी।

यह तो खैर एक छोटी सी कहानी थी। उन्होंने मुझे इससे ज्यादा बड़ी और अजीब कहानियां सुनाई थीं। एक किस्सा किसी देवता और उसके साथी राजा से चाचा की लड़ाई का था। चाचा बहुत भारी आवाज में इस लड़ाई की बातें याद करते थे। यह लड़ाई सचमुच बहुत घमासान रही होगी। एक तरफ चाचा अकेले थे और दूसरी तरफ देवता और राजा दोनों। लेकिन चाचा की होशियारी के आगे उन दोनों की एक न चली।

मेरा ख्याल है कि चाचा जरूर कोई कला जानते होंग जिसे लोग जादू कहते हैं। लड़ाई में देवता और राजा को जमीन पर उतारना जरूरी था, इसलिए चाचा ने देवता के उड़नखटोले को पंखा बना कर और राजा के हाथी को किताबों का रैक बना कर घर में रख लिया। पंखा चाचा के कमरे की छत से अभी तक लटक रहा है और रैक म उनकी किताबें भरी पड़ी हैं। चाचा ने मुझे बताया था कि इनमें से कई किताबें जादू के बारे में हैं।

सवारियां गायब हो जाने से चाचा के दोनों दुश्मन ज़मीन पर गिर पड़े और चाचा ने उन्हें आसानी से पछाड़ दिया। लड़ाई खत्म हो जाने के बाद चाचा अपने दुश्मनों के महल देखने गए। चाचा ने मुझे बताया था कि

पहले तो उन्हें देवता और राजा के महलों में कोई चीज़ अपने मतलब की दिखी ही नहीं। गाढ़े रंगों वाले लंबे-लंबे पर्दे, मोटे-मोटे बदसूरत खंभे, भारी-भारी कुर्सियां वगैरह देख कर चाचा का मन इतना खराब हुआ कि उन्होंने बाहर निकल कर एक दुकान में चाय पी। चाय पीते हुए उनके मन में आया कि वह दोनों महलों के कुछ चीजों को अपने काम की चीजों में बदल कर घर ले जा सकते हैं। यह सोच कर वह वापस गये। राजा के सिंहासन को उन्होंने एक मूढ़े में बदल दिया और लटकते हुए पदो के झाड़न बना लिए। देवता के महल में चांदी का एक थूकदान था। इसे चाचा ने पेंसिल छीलने के कटर में बदल दिया। इस तरह के और तमाम सामान से उन्होंने अपनी जरूरत की चीज़ें बना लीं।



इस लड़ाई के किस्से सुनाने के बाद चाचा मुझे अपने घर की वे सारी चीज़ें दिखाते थे जिन्हें वह देवता और राजा के जीत कर लाए थे। चाचा की मेज़ की बगल में रखा मैला-सा मूढ़ा देख कर मैं मन ही मन राजा के सिंहासन की कल्पना करता और छत से लटकते बिजली के सफेद पंखे को देख कर सोचता क यह उड़नखटोले की शक्ल में कैसा लगता होगा।

एक बार इतवार के दिन मेरा दोस्त लल्ला सुबह-सुबह आ गया और हम दोनों ने चाचा के यहां जाने का तय किया। जब हम उनके घर पहुंचे तो देखा कि चाचा रसोई में खड़े चाय बना रहे हैं। चाचा ने हमें रसोई में आ जाने को कहा और पूछा कि हम लोग क्या खाएंगे? चाय पीने को उन्होंने नहीं पूछा क्योंकि चाचा को हमारा चाय पीना बिल्कुल पसंद नहीं था। 'पहले आप अलमारी खोल कर दिखाइए कि आप के पास आज क्या है, फिर बताएंगे' मैंने खूब सोच कर चाचा से कहा। चाय की पतीली स्टोव से उतारते हुए चाचा ने मेरी बात का ऐसा जवाब दिया कि मै और लल्ला दोनों भौंचक्के रह गये।

'इसमें कुत्ते, बिल्लियां और चूहे हैं।' इतना कह कर चाचा चुप हो गये और हम लोग ठगे से खड़े अलमारी को देखते रहे। दो मिनट बाद लल्ला ने पूछा, 'वे तीनों साथ-साथ कैसे रहते हैं? बिल्लियां चूहों को और कुत्ते बिल्लियां को खा क्यों नहीं जाते?'

'इसलिए कि वे अलग-अलग खानों में बंद है। ऊपर कुत्ते हैं, बीच में बिल्लियां और नीचे चूहे।'

लल्ला की बढ़ती हुई हैरानी देख कर मैंने उसकी मदद करनी चाही हालांकि मैं खुद काफी परेशान था। 'लल्ला, यह सब झूठ है', मैंने कहा, 'मैं तुम्हें सच बताता हूं। मैंने अलमारी देखी है। ऊपर के खाने के डिब्बे हैं, बीच वाले में बर्तन और नीचे वाले में डबल रोटी, बिस्कुट वगैरह।' यह कहते हुए मेरे मन में आया कि आगे बढ़कर अलमारी खोल दूं। लेकिन मैं मुड़ा ही था कि चाचा ने मुझे हाथ बढ़ा कर रोक लिया और कहा-'इस अलमारी में जो जानवर हैं वे बहुत डरपोक हैं। खास तौर पर लल्ला से वे डरते हैं। इसलिए अलमारी खुलते ही वे सब गायब हो जायेंगे।'

चाचा की बात सुन कर लल्ला की आंखें फटी रह गयीं। उसने चाचा से पूछा, 'वे सब कहां चले जाएंगे?' चाचा का उत्तर जैसे पहले से ही तैयार था-'कुत्ते डिब्बे बन जाएंगे, बिल्लियां बर्तन और चूहे डबलरोटी,

बिस्कुट, वगैरह।'

मुझे लगा कि मैं चाचा की चाल कुछ-कुछ समझ रहा हूं। इतनी देर में लल्ला को एक तरकीब सूझी। उसने अपनी आवाज दबा कर कहा-'चाचा! मैं छिप कर देखूंगा आप दरवाजे को बिल्कुल थोड़ा सा खोलिए, किसी को कुछ मालूम नहीं पड़ेगा।'

और यह कहकर लल्ला सचमुच दबे पांव रसोई के दरवाजे के पीछे जा कर खड़ा हो गया। चाचा अब कर ही क्या सकते थे? उन्होंने आगे बढ़कर अलमारी की कुंडी धीरे से खींची और साथ में कहना शुरू किया-'ये जानवर तुम लोगों से ज्यादा सतर्क हैं। मेरा ख्याल है, वे तुम्हारी बातें सुन कर ही बदल गये होंगे पर शायद...'

चाचा अपनी बात पूरी नहीं कर पाए। अलमारी का दरवाज़ा मुश्किल से एक-दो अंगुल खुला होगा कि नीचे के खाने से एक चुहिया निकल कर भागी। उसका निकलना था कि मैं और लल्ला चीखते हुई रसोई से भागे। चाचा हमें भागते देख कर हंसने लगे और बोले, 'आज मालूम पड़ा कि मेरे जानवर तुम लोगों से कम डरपोक हैं।'